

ISSN No.: 2349-1787

वर्ष-14, अंक-14

TITLE CODE: UPHIN49200

गाथांतर

समग्र मूल्यांकन की कसौटी

संयुक्तांक (जनवरी-दिसंबर, 2025)



कृष्णा
सोबती
विशेषांक

साहित्य, संस्कृति एवं कला की पूर्व-समीक्षित त्रैमासिक पत्रिका

ऐ लड़की : स्मृति लोक के बिखरे यौवन को बुनती कहानी

◦ वन्दना यादव ◦

ऐ लड़की कृष्णा सोबती की एक बहुत लंबी कहानी है। मां-बेटी के बीच संवाद पर केंद्रित कहानी अपनी भाषाई पकड़ में पाठक को बाँध कर अपने साथ लिए चलती है। कहानी में मुख्य चरित्र दो हैं। पहला एक उम्रदराज मध्यवर्गीय महिला का और दूसरा चरित्र उसकी बेटी का है जो तथाकथित रूप से विवाह की उम्र पार कर गई है। दो अन्य चरित्र भी हैं जिनमें एक मम्मू की देखभाल करने वाली सहायिका और दूसरा एक डॉक्टर है।

इसके अतिरिक्त कहानी में कुछ और चरित्र भी हैं। दरअसल वह सब मम्मू के स्मृति लोक में बसे हुए हैं। इस उम्रदराज महिला का भरा-पूरा परिवार रहा है। उसके पास स्मृतियों का खजाना है। इसे विशाल तहखाना कहना अधिक न्यायसंगत होगा। स्मृतियों को अपने मन में जीवित रखने के कारण मम्मू के मन में तरह-तरह की भाव-भावनाएं आती-जाती रहती हैं। उसे अपना हर रिश्ता याद है। सब बच्चों के साथ के संबंध भी याद हैं। मम्मू उसकी उस अवस्था में है जहाँ वह भी जानती है कि वह मृत्यु का इंतजार कर रही है। इस सबसे भी वह निराश नहीं होती। उसके बच्चे इस अवस्था में उससे मिलने नहीं आते, यह जानते हुए भी वह हताश नहीं होती। एक अलग किस्म का खिलंदड़ापन मम्मू की बातों में चस्पा रहता है। दर्द और तकलीफ के बावजूद वह जीवन से निराश नहीं है जबकी उसे आन है कि जीवन उसके हाथों से फिसलता जा रहा है।

आमतौर पर वृद्धावस्था जीवन से निराशा और शिकवा शिकायतों को अपने साथ ढोने को विवश होती है। हताशा उस पर हावी रहने लगती है मगर मम्मू का चरित्र अलग किस्म का है। मध्यवर्गीय परिवार की यह बुजुर्ग महिला, शादी के बाद परिवार की अवधारणा में विश्वास रखने वाली महिला है। अपनी सबसे छोटी बेटी जिसके साथ वह इन दिनों रह रही है, वह अविवाहित है। विवाह के सामाजिक ढाँचे में बेटी को विश्वास नहीं है। यह बात मां-बेटी के रिश्ते में कुछ असहजता और खटास लिए चलती है। बातें कभी-कभी कड़वाहट तक भी पहुँच जाती हैं मगर मृत्यु का इंतजार कर रही मम्मू को इससे अधिक अन्य किसी बात पर, किसी से कोई अपेक्षा नहीं है।

कहानी में वर्णित मम्मू एक जटिल स्थिति में है। गिरने की वजह से चोटिल हो गई मम्मू ने बिस्तर पकड़ लिया है। कहना होगा कि बीता समय इस अवस्था में भी मम्मू के स्मृति लोक में उठती-गिरती लहरों के मार्निंद आता-जाता रहता है। मम्मू की यादों में सब तरह के विचार उमड़ते-धुमड़ते रहते हैं। वह जानती है कि जीवनी रेत की तरह छूट रहा है। उसका शरीर भी धीरे-धीरे साथ छोड़ने लगा है। इस अवस्था में भी उसकी यादाश्त बिल्कुल सही है। उसे सब प्रकरण ठीक-ठीक याद है बल्कि कहा जाए कि उसकी इन्द्रियाँ ज्यादा सजग और सक्रिय हो उठती हैं। तब सही होगा। मम्मू के मन में सब तरह के विचार आते-जाते रहते हैं जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों शामिल हैं। मम्मू ने भरापूरा जीवन जीया था। उसके पास रिश्तों की लंबी-चौड़ी फेहरिस्त है। बार-बार चलती आँधियों के समान मम्मू के मन में उठते झोंके भी यादों के खजाने बिखरा देते हैं और वह इन्हीं बिखरे धागों को बुनने-बिखेरने में जुट जाती है। उपरी तौर पर माँ-बेटी के वैचारिक मतभेद और तकरार दोनों के मध्य अलगाव जैसी स्थिती बनाते हैं मगर यह सच नहीं है। बेटी अपनी माँ को अच्छे से जानती है। उसे मालूम है कि अधिक सोच-विचार से माँ के विचार नकारात्मक हो सकते हैं। माँ को मृत्यु भय से बचाए रखने के लिए वह हर बार सोच का कोई नया सिरा माँ को थमा देती है।

जीवन के बाद मृत्यु तय है। यही शाश्वत सत्य है। एक उम्र के बाद शरीर का कमजोर हो जाना, पराश्रित हो जाना भी संभव है। परिवार जन इस अवस्था में सहानुभूति तो रख सकते हैं। सेवा भी कर सकते हैं लेकिन इससे अधिक और कुछ नहीं कर सकते। जिसका शरीर है, अपने शरीर का दुःख उसे ही उठाना होता है। मम्मू के साथ भी यही हो रहा है। उसने तमाम रिश्तों के साथ भरपूर जीवन जीया। खट्टे-मीठे अनगिनत पल उसकी यादों के खजाने में सुरक्षित हैं। वह मृत्यु के निकट आते जाने की सच्चाई से भलीभाँति परिचित है इसके बावजूद वह जीवन के किसी भी पल से अपना दावा छोड़ने को तैयार नहीं है। मम्मू ने अपने हर बीते पल को अपनी इन्द्रियों में जकड़ रखा है।

मम्मू के चरित्र में अनेक पन्ने हैं। साधारण तौर वह मृत्यु का इंतजार करती एक वृद्ध महिला दिखाई देती है मगर जिस शिद्दत

से वह अपना बीता कल याद करती है, वह हैरान करता है। उसकी स्मृति में जीवन भर की घटनाएँ, बिंब, तसवीरें और यादें अब तक ताजा हैं। जीवन को देखने का उसका नजरिया, उसकी जीजीविषा, खिलंदड़ापन, आसन्न मृत्यु के अहसास के बावजूद हर पल को जीने की चाह और बातचीत से झलकता दार्शनिक अंदाज इस चरित्र के मनोविज्ञान को समझने के लिए प्रेरित करता है।

मम्मू का भरा पूरा परिवार रहा है जिसमें बेटा-बहु, बेटी, पोते-पोती, नाती-नातिन सब हैं। सबके होते हुए भी उसने छोटी बेटी के साथ अकेले रहने को चुना है। इतने रिश्तों से आई मम्मू के मन में सबकी याद बनी रहती है। हर आहट पर उसे लगता है कि कोई आया है जबकि आता कोई नहीं है। उसे इंतजार है मगर किसी के नाम आने से वह हताश नहीं होती। ना किसी को दोष देती है और ना ही उलाहना। वह अपनेआप से इतनी संतुष्ट है कि उसे किसी से शिकायत नहीं है। मृत्यु की ओर बढ़ते कदमों को वह पहचान रही है इसके बावजूद वह अवसाद में नहीं जाती। हताश या निराश होने के स्थान पर वह अपनी मौत के बारे में भी चुहल करती है। हँसी-मजाक करना उसकी आदत है। अपने स्वभाव से वह माहौल को जीवंत बनाए रखती है।

मम्मू एक माँ है। उसने प्रसव पीड़ा सही है इसीलिए जानती है कि यह कितना दर्दनाक अनुभव होता है। उसका महिलाओं के प्रति अलग नजरिया है। वह स्त्रियों के दर्द सहने की क्षमता को प्रसव पीड़ा से जोड़ती है।

मम्मू के पति पहले ही गुजर गए थे इसीलिए वह जितनी भी सहज लगे लेकिन हर समय वह चौकन्नी रहती है। उसने जीवन को भरपूर जीया है। उसे किसी से कोई शिकायत नहीं है और ना ही वह किसी से किसी तरह की अपेक्षा रखती है। उसे जिंदगी खूबसूरत लगती है इसीलिए अजब तरह की बेफिक्र और खिलंदड़ापन उसका मिजाज बन गया है। जीवन का कोई भी सिरा वह छोड़ने को तैयार नहीं है। अपनी बेटी से संवाद में भी उसका पूरा हक रखना इस बात को स्थापित करता है।

कहानी में माँ-बेटी की बातचीत तीखा रुख भी अख्तियार करती है। दो पहियों का दृष्टिकोण, टोनी की सोच के अलर को दर्शाता है। माँ-बेटी के संवाद टकराहट में बहस में भी बदलते हैं। यह कहानी सबसे निकट रिश्ते में आपसी नोक-झोंक की असहमति की और विश्वास अविश्वास की बदलती स्थिति की कथा कहती है। असल में मम्मू एक जिंदादिल इंसान है। जब बेटी उसकी बातों से आजिज आकर दूसरे कमरे में चली जाती है। तब मम्मू का अगत्य कदम पाठक को चौंकाता है। बेटी के दूसरे कमरे में चले

जाने के बाद वह बेटी के पास पहुंचती है। मम्मू का बेटी के साथ सिगरेट का कश लगाना यह प्रसंग इस कहानी को अलग स्तर पर ले जाता है। मम्मू अपनी हमउम्र महिलाओं से अलग सोच रखने वाली महिला साबित होती है।

कृष्णा सोबती का कहन पाठक को चमात्कृत करता है। आपकी लेखन शैली और भाषा का प्रयोग तथा किरदारों का ट्रीटमेंट बताता है कि वह हार ना मानने को जीवन मंत्र मानती रही होगी। ऐ लड़की की प्रमुख चरित्र मम्मू में इस कहानी में भी संघी को चौर कर जीने की जीजीविषा दिखाई देती है। हर पल नजदीक आती मृत्यु का उसे कोई भय नहीं है बल्कि यह बीत गए जीवन के हर लम्हे को फिर से जीने का आमंत्रण देती हुई-सी लगती है। मृत्यु के भय से घबराए अथवा भयातुर समाज के समक्ष मम्मू निर्भय जीवन जीने और मौत आने से पहले एक बार और भरपूर जीवन जी लेने की मिसाल पेश करती हुई लगती है। मृत्यु को वह सहज स्वीकार करती है।

कहानी माँ-बेटी के रिश्ते की बारीकियों पर, विचारों के अस्वीकार्य पर और सहमति असहमति की उलझन पर बात करती है। इस सबके साथ कहानी पेचीदा स्थिति को धैर्य और संयम के साथ सुलझाती हुई मानवीय सोच का एक नवीन चित्र खींचती हुई-सी लगती है। दोनों का उलझा हुआ। असहज रिश्ता कहानी के अंत में सुलझ जाता है। दोनों के बीच एक मित्रता स्थापित हो जाती है। एक ढर्रे पर चल रहे समाज को यह कहानी नया विचार सौंपती, एक नया आयाम देती है।

✉ yvandana184@gmail.com

